

कश्मीर में हमिपात न होने के प्रभाव

प्रलिस के लयि:

कश्मीर में हमिपात न होने के प्रभाव, [पश्चिमी वकिषोभ](#), [जलवायु परविरतन](#), [हमिलयी कषेत्तर](#), [अल-नीनो](#)

मेन्स के लयि:

महत्त्वपूर्ण भू-भौतिकीय परघटनाएँ, भौगोलिक वशिषताएँ और उनकी अवस्थति, जलवायु परविरतन के प्रभाव

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यों?

सर्दियों के मौसम के दौरान कश्मीर में हमिपात की अनुपस्थिति **केवल कषेत्तर के**, वशिषकर गुलमर्ग जैसे लोकप्रिय स्थलों के, **पर्यटन उद्योग को प्रभावति कर रही है** अपति इसका स्थानीय पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था के वभिन्नि पहलुओं पर भी महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

कश्मीर में हमिपात न होने का क्या कारण है?

- **जलवायु और मौसम पैटर्न:**
 - संपूर्ण जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख कषेत्तरों में इस सर्दी में **वर्षा अथवा हमिपात की कमी** देखी गई है, जिसके अनुसार **दसिंबर 2023 में वर्षा में 80% की उल्लेखनीय कमी** तथा जनवरी 2024 में अभी तक 100% (कोई वर्षा नहीं) की कमी दर्ज की गई है।
 - इन कषेत्तरों में शीतकालीन वर्षा मुख्यतः हमिपात के रूप में होती है जो स्थानीय जलवायु के लयि महत्त्वपूर्ण है।
- **पश्चिमी वकिषोभ में कमी:**
 - बर्फबारी में कमी की समग्र परवृत्ता को **पश्चिमी वकिषोभ** की घटनाओं में कमी और **तापमान में धीरे-धीरे वृद्धि** के लयि ज़मिमेदार ठहराया गया है, जो संभवतः **जलवायु परविरतन** से प्रभावति है।
 - पश्चिमी वकिषोभ **हमिलयी कषेत्तर** में **शीतकालीन वर्षा का प्राथमिक स्रोत** है।
 - पश्चिमी वकिषोभ की घटनाओं की संख्या में कमी देखी जा रही है, जिससे सर्दियों के महीनों के दौरान कुल वर्षा कम हो रही है।
 - पश्चिमी वकिषोभ **पूरव की ओर बढ़ने वाली विशाल वर्षा-वाहक पवन प्रणाली** है जो अफगानसितान और ईरान से आगे शुरू होती है, जो **भूमध्य सागर तथा यहाँ तक कि अटलांटिक महासागर तक नमी लाती है**।
- **जलवायु परविरतन एवं अल-नीनो की भूमिका:**
 - वभिन्नि अध्ययनों से ज्ञात होता है कि **कश्मीर में बर्फबारी में कमी के लयि जलवायु परविरतन** को एक महत्त्वपूर्ण कारक माना जाता है।
 - पूरवी प्रशांत महासागर में वर्तमान **अल-नीनो** घटना को **वैश्विक वायुमंडलीय परसिंचरण को प्रभावति करने और कषेत्तर में कम वर्षा में योगदान देने वाले एक अतिरिक्त कारक के रूप में सुझाया गया है**।
 - पछिले एक दशक में वर्ष 2022, 2018, 2015 में जम्मू और कश्मीर में सर्दियाँ अपेक्षाकृत शुष्क रही हैं तथा हमिपात में कमी आयी है।

कश्मीर में हमिपात न होने के क्या प्रभाव हैं?

- **लघु एवं दीर्घकालिक प्रभाव:**
 - अल्पकालिक प्रभावों में वनाग्न में वृद्धि, कृषि संबंधित अनावृष्टि और फसल उत्पादन में गरिावट शामिल है।
 - दीर्घकालिक परिणामों में **जलवदियुत/पनबजिली उत्पादन में कमी**, हमिनद के पघिलने में वृद्धि और भूजल के कम पुनर्भरण के कारण पेयजल आपूर्ति पर प्रतिकूल प्रभाव शामिल हैं।
- **शीतकालीन फसलों के लयि महत्त्वपूर्ण:**
 - सर्दियों की बर्फ/हमि, जो मृदा में नमी के लयि महत्त्वपूर्ण है, शीतकालीन फसलों, वशिषकर बागवानी के लयि भी महत्त्वपूर्ण है। पर्याप्त

हमिपात के अभाव में स्थानीय अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान देने वाले **सेब** और **केसर** की उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

■ **पर्यटन पर प्रभाव:**

- कश्मीर के प्रमुख शीतकालीन पर्यटन स्थल गुलमर्ग में अपर्याप्त बर्फबारी के कारण इस मौसम में पर्यटकों की संख्या में भारी गिरावट देखी जा रही है। वर्ष 2023 में पर्यटकों की पर्याप्त संख्या के बावजूद, अधिकारियों का अनुमान है कि पर्यटकों की संख्या में कम-से-कम **60% की कमी** आएगी।
- बर्फ की कमी **स्की रिसॉर्ट्स (Skiresort) और संबंधित व्यवसायों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल** रही है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था प्रभावित हो रही है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????:

प्रश्न. भारतीय मानसून का पूर्वानुमान करते समय कभी-कभी समाचारों में उल्लिखित 'इंडियन ओशन डाइपोल (IOD)' के संदर्भ में नमिलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं? (2017)

1. IOD परघटना उष्णकटबिंधीय पश्चिमी हृदि महासागर एवं उष्णकटबिंधीय पूर्वी प्रशांत महासागर के बीच सागर-पृष्ठ के तापमान के अंतर से वशिषति होती है।
2. IOD परघटना मानसून पर अल-नीनो के असर को प्रभावति कर सकती है।

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1, न ही 2

उत्तर: (b)

??????:

प्रश्न. असामान्य जलवायवी घटनाओं में से अधकिांश अल-नीनो प्रभाव के परिणाम के तौर पर स्पष्ट की जाती है। क्या आप सहमत हैं? (2014)